भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में रामसुतार की भूमिका और योगदान

राम तीरथ
शोधकर्ता, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान – 333001

डॉ. अनंता सांडिल्य
शोध निर्देशक, (सह–आचार्य)श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय

सार

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा है। वे भारतीय मूर्तिकला की उस परंपरा के अग्रदूत माने जाते हैं, जिसमें यथार्थवाद, भावाभिव्यक्ति और सांस्कृतिक गौरव का संतुलित समावेश मिलता है। राम सुतार ने राष्ट्रीय नेताओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक प्रतीकों को यथार्थपरक शैली में मूर्त रूप दिया। उनकी प्रमुख कृतियों में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' — जो विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है — एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को अमर बनाती है। इसके अलावा महात्मा गांधी, बुद्ध, और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय आत्मा को मूर्त रूप प्रदान किया है।

राम सुतार की कला में सूक्ष्म विवरण, जीवंतता और ऐतिहासिकता का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। उन्होंने न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय मूर्तिकला की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। उनके कार्य भारतीय यथार्थ मूर्तिकला को एक नई पहचान और दिशा देने में सहायक रहे हैं। यह शोध उनके योगदान का विश्लेषण करते हुए भारतीय मूर्तिकला में यथार्थवाद की प्रवृत्तियों और उनके कलात्मक प्रभाव को उजागर करता है।

मुख्य शब्द : रामसुतार, भारतीय मूर्तिकला, यथार्थवाद, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, शिल्पकला, राष्ट्रीय चेतना, भारतीय संस्कृति, मूर्तिकला में यथार्थता

परिचय

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला के क्षेत्र में राम सुतार का नाम अत्यंत सम्मान और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे एक ऐसे मूर्तिशिल्पी हैं जिन्होंने भारतीय कला को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी गौरव दिलाया है। उनकी कलाकृतियाँ यथार्थवाद, भावनात्मक गहराई और ऐतिहासिक चेतना का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करती हैं।

राम सुतार ने स्वतंत्रता संग्राम के नायकों, सांस्कृतिक प्रतीकों और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की मूर्तियों को इस प्रकार आकार दिया कि वे जीवंत प्रतीत होती हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'स्टैचू ऑफ यूनिटी'—

जो सरदार वल्लभभाई पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है—न केवल तकनीकी दृष्टि से एक चमत्कार है, बल्कि यह उनकी यथार्थवादी शैली और दृष्टिकोण का सर्वोत्तम उदाहरण भी है।

इस लेख में हम भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार के योगदान, उनकी शैली की विशेषताएँ और उनके प्रमुख कार्यों का विश्लेषण करेंगे, जो आधुनिक भारत की सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, जो हड़प्पा सभ्यता की मूर्तिकलाओं से लेकर आधुनिक समय की शिल्पकला तक फैला हुआ है। इस इतिहास में मूर्तिकला ने विशेष स्थान प्राप्त किया है। यद्यपि भारत में विविध कलात्मक शैलियाँ और प्रवृत्तियाँ उभरती रहीं हैं, परंतु यथार्थवाद एक ऐसी शैली रही है, जिसने विशेषकर 20वीं और 21वीं शताब्दी में भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा दी। इस यथार्थपरक कला की परंपरा को आधुनिक भारत में जिन मूर्तिकारों ने जीवंत किया, उनमें राम सुतार का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है।

राम वणजी सुतार, जिन्हें हम अधिकतर श्राम सुतारश के नाम से जानते हैं, भारतीय मूर्तिकला के ऐसे मूर्धन्य कलाकार हैं, जिनकी कला में न केवल यथार्थ का गहन चित्रण है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रवाद, ऐतिहासिकता और आधुनिकता का अद्‌भुत समन्वय भी है। उनका जन्म 19 फरवरी 1925 को महाराष्ट्र के ढूंडी गांव में हुआ था, और वे 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 21वीं शताब्दी की शुरुआत के सबसे प्रसिद्ध और सक्रिय मूर्तिकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने भारत ही नहीं, विश्व स्तर पर भी मूर्तिकला में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

राम सुतार का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली है। उनकी बनाई मूर्तियाँ केवल कलात्मक कृ तियाँ नहीं हैं, बल्कि वे भारत के इतिहास, संस्कृति और सामूहिक स्मृति के प्रतीक बन चुकी हैं। उनकी मूर्तियों में प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों, धार्मिक हस्तियों और ऐतिहासिक चरित्रों के जीवंत चित्रण मिलते हैं, जो दर्शकों को न केवल दृश्य सौंदर्य प्रदान करते हैं, बल्कि उनमें देशभक्ति और गौरव की भावना का भी संचार करते हैं।

राम सुतार की मूर्तियों की सबसे प्रमुख विशेषता उनका यथार्थवाद है। वे जिस पात्र या चरित्र को मूर्त रूप देते हैं, उसमें उसका आंतरिक व्यक्तित्व, भाव—भंगिमा, शारीरिक संरचना और ऐतिहासिक परिवेश अत्यंत सजीव रूप में प्रकट होता है। चाहे वह महात्मा गांधी की शांत मुद्रा हो या सरदार वल्लभभाई पटेल की दृढ़ता, राम सुतार की मूर्तियाँ केवल बाह्य रूप तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे आंतरिक गुणों को भी मूर्त रूप में व्यक्त करती हैं।

भारत की सबसे ऊँची मूर्ति — 'स्टैचू ऑफ यूनिटी'

राम सुतार के कार्यों में 'स्टैचू ऑफ यूनिटी' का विशेष उल्लेख किया जाना अनिवार्य है, जो न केवल भारत की, बल्कि विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति है। यह मूर्ति सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित है और

इसकी ऊँचाई 182 मीटर है। यह नर्मदा नदी के किनारे गुजरात के केवड़िया में स्थित है। इस भव्य मूर्ति को बनाकर राम सुतार ने भारतीय मूर्तिकला को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई है। इस परियोजना में उनकी तकनीकी दक्षता, कलात्मक दृष्टि और ऐतिहासिक संवेदनशीलता का पूर्ण समावेश है।

'स्टैचू ऑफ यूनिटी' एक राष्ट्र के रूप में भारत की एकता, अखंडता और सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है। यह महज एक मूर्ति नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की कल्पना और इसकी जड़ों को सम्मानित करने का एक सशक्त माध्यम है। इस मूर्ति को मूर्त रूप देने में राम सुतार ने जिस यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रयोग किया, उसने उन्हें वैश्विक कला जगत में अद्वितीय स्थान दिलाया है।

गांधी मूर्तियों का जीवंत चित्रण

राम सुतार की एक अन्य विशेषता यह है कि उन्होंने महात्मा गांधी के विभिन्न मुद्राओं में अनेक मूर्तियाँ बनाईं, जो आज भारत और विश्व के कई देशों में स्थापित हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध गांधीजी की 'दांडी यात्रा' की मुद्रा में बनाई गई मूर्ति है, जो भारतीय संसद परिसर में स्थित है। इसमें गांधीजी के नेतृत्व में

उनके अनुयायी नमक सत्याग्रह के लिए बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। यह मूर्ति केवल एक ऐतिहासिक क्षण को नहीं दर्शाती, बल्कि यह गांधीवादी विचारधारा, अहिंसा, और जनचेतना की प्रतीक बन चुकी है।

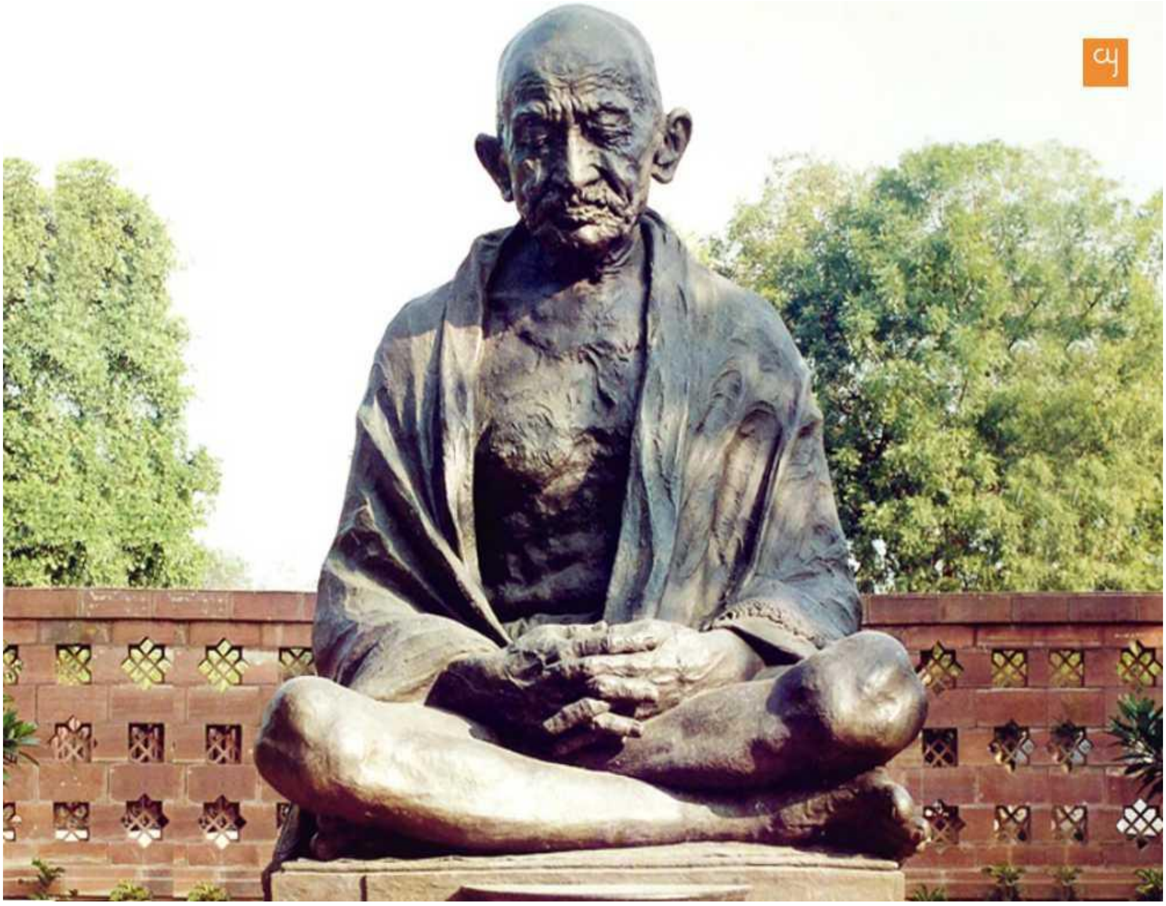

यथार्थ मूर्तिकला में सजीवता और संवेदनशीलता

राम सुतार की मूर्तियों की सबसे उल्लेखनीय विशेषता उनकी श्सजीवताश है। वे जिस भी पात्र को मूर्त रूप देते हैं, उसमें मानो प्राण फूंक देते हैं। उनके बनाए हुए चेहरे की भाव–भंगिमाएँ, हाथों की मुद्राएँ, वस्त्रों की परतें और संपूर्ण मुद्रा इस प्रकार निर्मित होती हैं कि वह दर्शकों से संवाद करती प्रतीत होती हैं। यही यथार्थ मूर्तिकला की आत्मा है दृ दृश्य के पार जाकर उसके अर्थ और आत्मा को पकड़ना।

उनकी कला में केवल यथार्थ चित्रण ही नहीं, बल्कि गहराई से सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों का समावेश भी होता है। राम सुतार की मूर्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि मूर्तिकला केवल कला नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज भी होती है।

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला की अवधारणा

यथार्थ मूर्तिकला एक ऐसी शैली है जिसमें कलाकार वास्तविकता को उसकी सम्पूर्णता और सजीवता के साथ अभिव्यक्त करता है। इसमें कल्पना और अलंकरण के स्थान पर सामाजिक, ऐतिहासिक और

मानवीय भावनाओं को मूर्त रूप दिया जाता है। यह शैली 19वीं और 20वीं शताब्दी में पश्चिमी कला में अधिक विकसित हुई और धीरे–धीरे भारतीय मूर्तिकला में भी इसका समावेश हुआ।

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक नई सांस्कृतिक पहचान बनाने की आवश्यकता थी, और मूर्तिकला इस दिशा में एक प्रमुख साधन बना। इस आंदोलन में राम सुतार जैसे मूर्तिकारों ने यथार्थवाद के माध्यम से भारत के महापुरुषों और ऐतिहासिक घटनाओं को प्रतिमा के रूप में अमर कर दिया।

राम सुतार की यथार्थ मूर्तिकला में विशेषताएँ

प्रभावशाली अभिव्यक्ति :

सुतार की मूर्तियों में चेहरों की भाव–भंगिमा, मुद्रा, और शारीरिक बनावट में अत्यधिक यथार्थता देखी जाती है। उनकी मूर्तियाँ केवल आकृतियाँ नहीं, बल्कि भावनाओं की जीवंत प्रस्तुति होती हैं।

ऐतिहासिक और राष्ट्रीय प्रतीकों का चित्रण:

उन्होंने महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित नेहरू, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस जैसे अनेक स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रीय नेताओं की मूर्तियाँ बनाईं, जो देशभक्ति और इतिहास को मूर्त रूप देती हैं।

तकनीकी उत्कृष्टता:

राम सुतार कांस्य जैसे परंपरागत माध्यम का उपयोग करते हुए अत्यंत जटिल और बारीक काम करने में निपुण थे। उनकी मूर्तियाँ तकनीकी दृष्टि से भी अत्यंत परिपक्व मानी जाती हैं।

विराटता और भव्यता:

उनकी मूर्तियों का आकार बहुत बड़ा होने के बावजूद भी वे अत्यंत संतुलित और सजीव प्रतीत होती हैं। वे सूक्ष्म विवरणों को बड़े पैमाने पर भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार की भूमिका

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रही है। उन्होंने न केवल यथार्थवादी शैली को भारतीय मूर्तिकला में पुनर्स्थापित किया, बल्कि उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठा दिलाई। उनकी मूर्तियाँ न केवल तकनीकी दृष्टि से उत्कृष्ट हैं, बल्कि उनमें भारतीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना भी गहराई से प्रतिबिंबित होती है।

1. यथार्थवादी शैली के संवाहक

राम सुतार की मूर्तियों में शरीर की बनावट, भाव–भंगिमा और अभिव्यक्ति की सजीवता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपने शिल्प में शारीरिक और मानसिक भावनाओं को बहुत ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया, जिससे दर्शक मूर्ति से जुड़ाव महसूस करते हैं। उनकी मूर्तियाँ भावनात्मक गहराई और ऐतिहासिक गंभीरता से भरपूर होती हैं।

2. प्रमुख कृतियाँ

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा)रू यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा (182 मीटर) है। यह मूर्ति राम सुतार की सबसे प्रमुख कृति मानी जाती है, जिसने भारत को वैश्विक मूर्तिकला मानचित्र पर स्थापित कर दिया।

महात्मा गांधी की मूर्तियाँरू भारत और विदेशों में गांधी जी की 100 से अधिक प्रतिमाएँ राम सुतार द्वारा निर्मित हैं। उनकी गांधी प्रतिमाएँ शांति, करुणा और विचारशीलता का मूर्त रूप हैं।

नेहरू, अंबेडकर, और अन्य राष्ट्रनिर्माताओं की मूर्तियाँरू उन्होंने भारत के कई महान नेताओं की मूर्तियाँ बनाईं जो विभिन्न संस्थानों, संग्रहालयों और सार्वजनिक स्थलों पर लगी हैं।

3. राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व

राम सुतार की मूर्तियाँ केवल यथार्थ का चित्रण नहीं हैं, वे भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों का मूर्त रूप भी हैं। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, संविधान निर्माता और भारतीय मूल्यों को मूर्त रूप में प्रस्तुत किया है।

4. तकनीकी दक्षता और नवाचार

राम सुतार ने कांस्य और अन्य धातुओं में मूर्तिकला को उच्च स्तर तक पहुँचाया। उनकी शिल्प तकनीक में बारीकी, संतुलन और स्थायित्व देखने को मिलता है। उनकी कार्यशैली ने भारत में सार्वजनिक स्मारक निर्माण की दिशा को नया आयाम दिया।

5. सम्मान और मान्यता

राम सुतार को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री (1999) और पद्म भूषण (2016) से सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार उनकी कला और संस्कृति में अभूतपूर्व योगदान के प्रमाण हैं।

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार का योगदान

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला के क्षेत्र में राम सुतार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। उन्होंने न केवल भारत में यथार्थ मूर्तिकला की परंपरा को सशक्त बनाया, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय मूर्तिकला की प्रतिष्ठा को स्थापित किया।

1. यथार्थवाद की पहचान

राम सुतार की मूर्तियों में गहरी यथार्थ भावना दिखाई देती है। उनके द्वारा निर्मित मूर्तियाँ न केवल शारीरिक स्वरूप की सटीकता प्रस्तुत करती हैं, बल्कि व्यक्तित्व, भाव–भंगिमा और आंतरिक ऊर्जा को भी दर्शाती हैं। यह यथार्थवाद उनकी कला को विशिष्ट बनाता है।

2. महापुरुषों की भव्य प्रतिमाएँ

राम सुतार ने भारत के अनेक महापुरुषों की यथार्थवादी मूर्तियाँ बनाईं, जिनमें महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस आदि प्रमुख हैं। उनकी महात्मा गांधी की बैठी हुई मूर्ति जिसे संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में भी स्थापित किया गया है, वैश्विक स्तर पर प्रशंसित है।

3. स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

राम सुतार का सबसे प्रसिद्ध कार्य ष्स्टैच्यू ऑफ यूनिटीष है, जो सरदार वल्लभभाई पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा (182 मीटर) है। यह मूर्ति तकनीकी उत्कृष्टता, यथार्थता और भव्यता का अद्वितीय संगम है। इस प्रतिमा ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई।

4. सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना का संवाहक

राम सुतार की मूर्तियाँ केवल सौंदर्य या यथार्थ तक सीमित नहीं हैं, वे भारत की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी हैं। उन्होंने मूर्तियों के माध्यम से भारतीय इतिहास और विरासत को जीवंत किया।

5. तकनीकी दक्षता और शैली

राम सुतार की मूर्तिकला में तकनीकी दक्षता, संरचनात्मक मजबूती और सूक्ष्म विवरणों की गहराई देखी जा सकती है। उनकी शैली ने आधुनिक भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा दी है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन है।

निष्कर्ष

भारतीय यथार्थ मूर्तिकला में राम सुतार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रहा है। उन्होंने न केवल यथार्थवाद की परंपरा को सशक्त बनाया, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, नायकों और ऐतिहासिक घटनाओं को मूर्तरूप देकर उन्हें अमर कर दिया। उनकी कृतियों में तकनीकी कुशलता, भावनात्मक गहराई और यथार्थ के प्रति समर्पण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। श्स्टैच्यू ऑफ यूनिटीश जैसी भव्य मूर्ति उनके उत्कृष्ट शिल्प कौशल और दूरदर्शिता का प्रमाण है। राम सुतार की कला भारतीय मूर्तिकला को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक रही है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी रहेगी।

संदर्भ

1. अर्चना रानी और पिंकी वर्मा (2018) भारतीय मूर्ति"िल्प इतिहासः एक दृ"िट, Vol. IX, No. 1: ISSN (P) : 0976-7444.
2. अनुबाला और राजपाल (2018) शुंगकालीन टेराकोटा मूर्तियाँः हरियाणा के संदर्भ में एक अध्ययन, Volume 8 issue 3, ISSN 2249- 894X.
3. अन्जू मलिक (2018) इतिहास लेखन में कला का योगदान, Volume 8 Issue 4 ISSN 2319 – 9202.

4. उमे”ा कुमार (2018) प्राचीन भारतीय इतिहास में ि”ाल्प श्रेणी, Volume 6, No.1, ISSN: 2320-2882.
5. श्रीवास्तव, बृजभूषण (2010) प्राचीन भारतीय प्रतिमा–विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी पृ. 1
6. कंचन कुमारी (2017) भारतीय चित्रकला में ललित कला व लोक संस्कृति का समावेश, Volume 5, Issue 12, ISSN- 2350-0530.
7. गीतम प्रधान (2023) मूर्ति शिल्प की विवेचना, Volume 12, Issue 1, ISSN 2319- 8753.
8. गुप्ता, ए. डी. (2000) शास्त्रीय भारतीय मूर्तिकला। रोली बुक्स।
9. ज्योतिष जोशी (2005) समकालीन कला, ललित कला अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली अंक 28 पृष्ठ सं. 9
10. दास, रायकृ‘ण – भारतीय मूर्तिकला, पृ‘ठ–92